Date
02 May 20

B.Ed = IInd

Sub - "Work Education, Gandhiji's Nai Talim & Community Engagement"

वाइगोट्स्की का सामाजिक निर्माणवादी उपागम :-

लेव सिमकोविच वाइगोट्स्की सोवियत रूस के एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक थे, जिनका विकासात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र में विशेष स्थान है। उन्होंने ज्ञान के आधार पर सामाजिक वातावरण में व्यवहारिक क्रियाओं का अध्ययन किया। वाइगोत्स्की का सामाजिक निर्माणवादी उपागम समाज द्वारा जो कुछ बालक के सामाजिकरण के समर्पित किया जाता है जैसे आचार-व्यवहार, तर्क-वितर्क, रहन-सहन के तरीके, समाज के तौर-तरीके, परिवार का वातावरण, समुदाय या समाज का वातावरण, आर्थिक व सामाजिक स्तर, आधुनिकता या नई-खोज या आविष्कारों का प्रभाव मानव द्वारा जो भी नई सामाजिक व्यवस्था बनती है इसका बालक पर जो भी सकारात्मक या नकारात्मक व्यवहार होता है वो सभी वाइगोत्स्की के उपागम का हिस्सा रहा है जिसने सामाजिक गतिशीलता को भी एक मुख्य आधार बताया।

वाइगोत्स्की के संज्ञानात्मक विकास में मुख्यतः इन्होंने बालक के व्यवहार में जो परिवर्तन होता है वह सभी सामाजिक निर्माणवादी संरचना के कारण है। जब बालक का जन्म होता है तो वह सभी तरह से अनभिज्ञ होता है उसे समाज या परिवार का कोई ज्ञान नहीं होता है लेकिन जैसे-जैसे वह जिस संस्था के संपर्क में आता है तो उसका व्यवहार भी उसी के अनुरूप बदलता रहता है।

वाइगोत्स्की ने व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास के तीन स्तर बताए हैं -

I. वास्तविक विकास स्तर :- इस स्तर पर बालक अपना कार्य स्वयं करते हैं उन्हें किसी दूसरे के सहयोग की आवश्यकता नहीं होती इस प्रकार वह स्वयं सीखता है।

Scanned with CamScanner

II. सम्भावित विकास स्तर ⇒ इस स्तर पर बालक अपना कार्य स्वयं नहीं कर पाते लेकिन सक्षम व्यक्तियों के निर्देशन में करने में सफल होते हैं।

III. निकटस्थ विकास स्तर ⇒ इस स्तर पर बालक किसी जटिल कार्य को न स्वयं कर पाते हैं और ना ही किसी सक्षम व्यक्ति के निर्देशन में कर पाते हैं उनको दूसरों के सक्रिय सहयोग की आवश्यकता होती है।

वाइगोट्स्की के अनुसार ज्ञान, अनुभव और कौशल का एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में हस्तांतरण तीन प्रकार से होता है-

I. अनुकरणीय अधिगम ⇒ इसमें अनुकरण करके सीखता है।

II. निर्देशित अधिगम ⇒ इसमें सिखाने वाले के निर्देशों का प्रयोग करके सीखता है।

III. सहयोगी अधिगम ⇒ इसमें सिखाने वाले अथवा साथियों के सहयोग से सीखता है।

वाइगोत्स्की के अनुसार भाषा बालक के ज्ञानात्मक विकास का एक साधन है यह ज्ञानात्मक विकास में मुख्य रूप से दो भूमिकाएँ निभाती है-

I - भाषा द्वारा तपस्क बालकों को सूचना देते हैं।

II - भाषा बौद्धिक अनुकूलन के लिए बहुत शक्तिशाली साधन है।

वाइगोत्स्की ने भाषा तीन प्रकार की बतायी हैं -

I. सामाजिक भाषा ⇒ यह बाह्य वार्तालाप है और इसका प्रयोग दूसरे से बातचीत करने के लिए किया जाता है।

II. निजी भाषा ⇒ जो मिडिल स्तर पर भाषा का विकास करती है।

III. आंतरिक भाषा ⇒ जो स्वयं निरीक्षण का कार्य करती है।

वाइगोट्स्की के अनुसार खेल बालक के संज्ञानात्मक, भावात्मक, और सामाजिक विकास को बढ़ावा देता है। खेल बालक के व्यवहार को संगठित करता है इसमें अपने व्यवहार पर नियंत्रण करने की क्षमता, नेतृत्व की शक्ति तथा सहयोगशीलता जैसे अनेक भावनाओं का विकास होता है। इसमें सामाजिक संस्थाओं के महत्व, परिवार, संस्था आदि सभी के महत्व को समझ सकता है।

Scanned with CamScanner